Qualities of a Good Music Performer.

गायक वादक के गुण

स्वर लय और ताल आदि के साथ-2 तथा रस और भाव को उचित रूप से सुचना करने के पश्चात जब कलाकार श्रोताओं के समक्ष कला प्रदर्शन करता है। इसका संगीत निश्चय ही श्रोताओं का मन जीतने में सफल होता है, क्या संगीत अपने उत्तम कलात्मक गुणों के कारण शीघ्र ही श्रोताओं के आदर तथा सम्मान का पात्र बन जाता है, किन्तु यदि संगीत की साधना उपयुक्त किसी भी पल से आपने छोड़ जाये तो उसके गायन, वादन में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते है जिनके कारण उसे श्रोता जगत में कभी भी सफलता नहीं मिल पाती।

हमारे संगीत शास्त्रकारों ने गायकों वादकों के गुणों तथा अवगुणों का वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली रूप से किया है। ताकि इनका अध्ययन करके संगीत विद्यार्थी आरम्भ से ही सुरुचित साधना द्वारा अपने गुणों को विकसित कर सके तथा अवगुणों से बच सके। यहाँ हम केवल एक अच्छे संगीतज्ञ के गुणों का अध्ययन करेंगे क्योंकि गुण ज्ञात होने पर दोषों का ज्ञान स्वयं ही हो जाता है, तथा गुणों का विकास करने से दोष अपने आप नष्ट हो जाते है।

महर्षि भरत, शारंग देव तथा अन्य ग्रन्थकारों द्वारा वर्णित गायक तथा वादकों के इन गुणों को हम निम्नांकित विवेचन द्वारा समझ सकते है :-

1. सदुचित आसन तथा वाद्य की पकड़ → गायन की अथवा वादन संगीत सभाओं में तथा दूरदर्शन आदि पर श्रोताओं पर सर्वप्रथम प्रभाव कलाकार के आसन अथवा वाद्य को पकड़कर बैठने के ढंग का पड़ता है। ज्ञात चाहे गायक के तानपूरा या स्वर मण्डल पकड़ने की हो अथवा वादक के अपना विशिष्ट वाद्य पकड़कर बैठने की, उसका आसन तथा वाद्य की पकड़ सही होनी चाहिए जिससे वाद्य के सही अंगों पर उसका उचित आनति नियन्त्रण रहे और वह देखने में भी अच्छा लगे।

2. मधुरता → गायक की आवाज़ की मधुरता कुछ तो प्रकृति की देन होती है और कुछ अभ्यास द्वारा विकसित की जाती है, इस प्रकार वादक में यह गुण वादक की व्यक्तिगत और सुसाधित साधना पर निर्भर करता है। गायन में आवाज़ लगाने का ढंग और वादन में वाद्य मिलाने तथा वादन करने का ढंग ऐसा होना चाहिए कि कला प्रदर्शन के आरम्भ से ही उसमें मधुरस का परिपाक आरम्भ हो जाए। आगे चलकर गायन वादन के किसी भी चरण में इस मधुरता में कमी नहीं आने देनी चाहिए।

3. स्पष्टता → एक अच्छे कलाकार में यह गुण होना भी परम आवश्यक है कि चले ही वह किसी ही द्रुत, लय में गा या बजा रहा हो, गायन में उसकी बानी अथवा बोल तानों में तथा वादन में उसके तोड़ा और बोल के समस्त आघातों का स्वर स्पष्ट और निशंकार सुनाई देने चाहिए।

4. स्वर तथा श्रुति ज्ञान → एक सुरेला कलाकार ही अपने वाद्य को अच्छी प्रकार स्वर में मिला सकता है, क्योंकि हमारा भारतीय संगीत बाइस श्रुतियों पर ही नहीं वरण बल्कि २२ श्रुतियों पर आधारित है, इसलिए अच्छे कलाकार में यह गुण होना चाहिए कि वह विशिष्ट श्रुतियों पर विशिष्ट स्वरों के लगाव को समझ सके और अपने गायन वादन में प्रयुक्त कर सके।

5. लय तथा ताल ज्ञान → एक श्रेष्ठ गायक तथा वादक के लिए यह भी आवश्यक है वह लयदार हो तथा साथ ही सभी प्रकार की लय तथा लयकारियों पर समान अधिकार रखता हो साथ ही उसे सभी प्रचलित तालों का ज्ञान होना चाहिए तथा इन में से अधिक से अधिक तालों में कुशलता के साथ-२ गायन, वादन करने की क्षमता होनी चाहिए।

6. राग ज्ञान → उत्तम कलाकार के लिए यह आवश्यक है कि उसे अधिक से अधिक रागों का सूक्ष्म ज्ञान हो बल्कि राग-प्राकृतिक रागों से बचने, अल्पत्व, बहुत्व तथा विशेषत्व आविर्भाव दिखलाने की क्षमता भी होनी चाहिए।

7. समुचित अभ्यास → संगीतज्ञों को कम से कम इतना तो करना ही चाहिए की अपने मन के अनुसार आलाप, बोल आलाप, बोल बाँट, बोल तान और तान आदि गा सके तथा वादन में आलाप, जोड़, झाला, तोड़ और बोल के विभिन्न प्रकारों का प्रदर्शन कर सके।

8. स्वर, लय व भाव का उचित समन्वय → श्रेष्ठ संगीतज्ञ को अपने गायन, वादन में स्वर लय और भावों का समन्वय इस प्रकार से करना चाहिए कि श्रोताओं को ऐसा प्रतीत हो मानो स्वर, और लय में ही भाव प्रवाहित हो रहे हैं।

9. ~~रच~~ रचनात्मक शक्ति → कलाकार में यह गुण भी होना चाहिए कि वह उसी समय सुन्दर आलापों, तानों, तोड़ों, झालों तथा विहाइ आदि की रचना कर सके किन्तु पुनरावृत्ति न हो साथ ही गीत अथवा राग की कोई भी पंक्ति अचानक भूल जाने पर तत्काल ही पंक्ति भी बना सके और स्थिति को सम्भाल सके।

10. लय सहित गायन व वादन → कलाकार को ताल से कठिन पैंतरों को भी इतने सहज ढंग से गाना चाहिए कि उसके श्रम की थकान श्रोता को न पड़े और श्रोताओं को यह भी आभास न हो कि कलाकार को गायन, वादन में अत्यधिक परिश्रम करना पड़ रहा है।

11. एकाग्रचित होकर गायन वादन करना → इसी तरह एकाग्रचित होने पर ही संगीत सही रूप में अवतरण कर सकेगा, और श्रोताओं का मन भी अपने गायन-वादन में समा सकेगा।

12. आत्मविश्वास → कलाकार में इतना आत्मविश्वास होना नितान्तावश्यक है कि वह कला मंच पर निर्भय होकर प्रत्येक परिस्थिति को देखते हुए और संभालते हुए अपना गायन वादन कर सके, उसे कभी भी हार या अथवा क्षमा प्रार्थना कर कला प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। इसके गायन-वादन से श्रोताओं को ऐसा प्रतीत होना चाहिए कि उसका स्वर, लय और तान इस व भाव पर पूर्ण नियंत्रण है।

13. विभिन्न शैलियों का ज्ञान → उत्तम गायक को अपनी विशिष्ट गायन शैली जैसे कि ख्याल के अतिरिक्त ठुमरी, टप्पा, धुनन, शब्द आदि तथा वादक को गत्कारी के अतिरिक्त थुत, ठुमरी, टप्पा आदि अन्य शैलियों का भी ज्ञान, और उसमें कुशलतापूर्वक कला प्रदर्शन करने की क्षमता होनी चाहिए।

14. कंठ संगीत का ज्ञान → कंठ संगीत का ज्ञान जहाँ गायक बनने के लिए परमावश्यक है, वहीं वादक के लिए भी आवश्यक है कि वह अपने वाद्य के साथ-२ कंठ संगीत की भी अच्छी शिक्षा प्राप्त करे, तभी वह टप्पा, ठुमरी आदि शैलियों के वास्तविक स्वरूप को समझकर उन्हें बजा सकेगा।

15. समय अवसर तथा श्रोताओं का ध्यान → एक अच्छे कलाकार में यह गुण होना भी नितान्तावश्यक है कि वह समय अवसर तथा श्रोताओं का ध्यान रखते हुए तुरन्त राग का चुनाव, गायन वादन की अवधि, गायन वादन का ढंग आदि का निश्चय कर सके।

16. संगीत शास्त्र का ज्ञान → एक उच्च कोटि के कलाकार के लिए क्रियात्मक संगीत के साथ-२ संगीत शास्त्र का भी पर्याप्त ज्ञान होना अति-आवश्यक है, बिना इसके वह अपने गायन-वादन को शुद्ध तथा नियमानुकूल नहीं रख सकेगा और न ही श्रोताओं का ठीक प्रकार से मनोरंजन कर सकेगा।

17. स्वर के अलंकरणों पर अधिकार → मींड, गमक, खटका, मुर्की, सूत, घसीट और कृतन आदि अनेक ऐसी क्रियाएँ हैं जो गायन-वादन में स्वरों को सजाने और निखारने का काम करती हैं। अतः एक अच्छे कलाकार के लिए यह आवश्यक है कि उसको इन सभी के प्रयोग का पूर्ण ज्ञान होना तथा यथा समय इनके प्रयोग करने की क्षमता प्राप्त हो। साथ ही इनमें से किस-२ अलंकरण का किस-२ राग में किस-२ सीमा तक प्रयोग करना चाहिए इसकी भी कलाकार को पूर्ण तथा स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए।

18. जन-मनोरंजन की क्षमता → कलाकार में यह क्षमता होना परम-आवश्यक है कि श्रोता इसके गायन-वादन पर मुग्ध हो सके, उसके संगीत में सहज ही श्रोताओं का मन अपने वश में कर लेने की क्षमता होनी चाहिए। केवल कलात्मक पक्ष अथवा स्वरों की गणितचाली बहुत तो संगीत में अकताहट ही उत्पन्न करेगी। अतः आवश्यक है कि कलाकार संगीत के कलात्मक तथा भावात्मक दोनों पक्षों को समेटते हुए उनका संतुलन बनाए रखे।

19. पांडित्य → एक अच्छे गायक की कण्ठ पांडित्य जितनी भी अधिक हो, उतना ही अच्छा है। कम से कम तीन सप्तकों में शुद्ध और साफ आवाज़ लगाएँ तथा आवश्यकतानुसार आवाज़ छोटी-बड़ी की जा सके। इसी प्रकार वादन में भी प्रत्येक वादक को अपनी वाद्य की सम्पूर्ण पांडित्य का ठीक-२ ज्ञान तथा यदि हो सके तो तीनों सप्तकों के साथ-२ अति-मन्द्र तथा अति तार सप्तकों के स्वरों को यथाशक्ति सफाई से रूप में लगाने की क्षमता होनी चाहिए।

20. गायकी अथवा बाज → प्रत्येक कलाकार की गायकी अथवा बाज अर्थात गायन अथवा वादन-शैली अधिक से अधिक पूर्ण और उसके कंठ अथवा वादन क्षमता और स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए। गायकी अथवा बाज अपूर्ण होने से उसके कला प्रदर्शन में कच्चापन रहेगा जिससे श्रोता श्रोत्र ही उकता जाएंगे तथा अच्छे कलाकार को सुनने की शिक्षा के साथ-२ अन्य कलाकारों को सुनकर उनके शैलीगत गुणों को भी अपनी गायन अथवा वादन शैली में भली भांति समझ करके अपनी शैली को अधिक मनोरंजक एवं मनोहारी रूप देना चाहिए।

21. राग के रस का ध्यान → कलाकार जो भी राग गा बजा रहा हो उससे सम्बन्धित रस अथवा रसों की अभिव्यक्ति उसके गायन वादन से होनी आवश्यक है। (राग की परिभाषा में भी कहा गया है "रसात्मक राग हेतु रागः" अर्थात जो भी गाया बजाया जा रहा

है उससे कोई न कोई रस उत्पन्न होने पर ही वह प्रभावशाली बन सकता है।

22. क्रम तथा व्यवस्था → अच्छे कलाकार का गायन-वादन तथा क्रमबद्ध और व्यवस्थित होना चाहिए रसा न हो कि कलाकार आलाप करते-2 अचानक तान लेने लगे और जब जी में आए स्थाई अंतरा दबाने लगे और फिर मन में आए तब दोबारा लम्बे-2 आलापों में उलझ जाए। ऐसा करने से राग गायन-वादन अव्यवस्थित अथवा बिखरा हुआ सा प्रतित होगा जिससे श्रोताओं को कोई आनन्द नहीं आएगा इसलिए आवश्यक है कि कलाकार अपने गायन-वादन में सदा एक निश्चित क्रम और व्यवस्था बनाए रखे।

23. विनम्र एवं मधुर स्वभाव → एक अच्छे कलाकार के लिए अहंकार से रहित विनम्र और मधुर स्वभाव का होना भी बड़ा गुण है। उसमें सरलचित्त स्नेहमयी प्रकृति और मधुर वाणी आदि गुण अवश्य होने चाहिए। यदि गायक के स्वभाव में मधुरता होगी तो वह उसके गायन-वादन में भी आ जाएगी और साथ ही साथी कलाकारों के साथ भी उसके मधुर सम्बन्ध बने रहेंगे। फलस्वरूप मंच पर उसका गायन और वादन और भी अधिक खिल उठेगा।

उपसंहार → यह एक निर्विवाद सत्य है कि श्रोता-जगत में सभी प्रकार के व्यक्ति होते हैं, कोई श्रोता कलाकार के सुरीलेपन तथा लयकारी पर ध्यान देता है तो कोई उसके तन अथवा हाथ की तथाशे को देखता है, जबकि कोई श्रोता कलाकार के हाव-भाव प्रदर्शन में ही आनन्द की अनुभूति करते हैं। इस प्रकार संगीत कला के सभी अंगों से भिन्न-2 प्रकार के श्रोता अपनी-2 रुचि के अनुसार रसास्वादन करते हैं। ऐसी दशा में स्पष्ट है कि कलाकार के विभिन्न गुण विभिन्न प्रकार के श्रोताओं को आकर्षित एवं प्रभावित करने में किस प्रकार सहायक सिद्ध होते हैं।

अशुद्ध रीति से अभ्यास हो जाने के बाद अवगुणों को छोड़ना तथा गुणों को अपनाना दोनों ही कार्य कठिन हो जाते हैं। ऐसी दशा में आवश्यक है कि हम आरम्भ से ही अभ्यास करते समय इस बात का ध्यान रखें कि किसी गायन-वादन शैली अवगुणों से बची रहे तथा उसमें गुणों का अधिकाधिक विकास हो सके, तभी हम उत्तम संगीतज्ञ बनने में सफल हो सकेंगे।